Maahe Ramzan Maahe Nek Aamal (Hindi)

MAKTABATUL MADINA INDIA

हफ़्तावार रिसाला : 443
Weekly Booklet : 443

माहे रमज़ान माहे नेक आमाल

(सफ़्हात : 20)

पैग़ामे आ़शिक़े रमज़ान 02
उल्टे लटके हुए लोग 05
बुज़ुर्गाने दीन और शौक़े तिलावत 12
चन्दा करने का ह़दीस से सुबूत 15

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى خَاتَمِ النَّبِيّٖنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

माहे रमज़ान माहे नेक आमाल

दुआए अत्तार : या रब्बल मुस्तफ़ा ! जो कोई 20 सफ़हात का रिसाला "माहे रमज़ान माहे नेक आमाल" पढ़ या सुन ले उसे रमज़ानुल करीम में ख़ूब नेक आमाल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा और उसे मां बाप और ख़ानदान समेत बे हिसाब बख़्श दे। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلَّی اللہُ علیہِ واٰلہٖ وسلَّم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** जो मुझ पर एक दिन में एक हज़ार बार दुरूदे पाक पढ़ेगा वोह उस वक़्त तक नहीं मरेगा जब तक जन्नत में अपना मक़ाम न देख ले। (امالی، ص118، حدیث:56)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

फ़ैज़ाने माहे रमज़ान

ऐ आशिक़ाने रसूल ! ख़ुदाए रहमान का करोड़हा करोड़ एहसान कि उस ने हमें माहे रमज़ान जैसी अज़ीमुश्शान नेमत से सरफ़राज़ फ़रमाया। माहे रमज़ान के फ़ैज़ान के क्या कहने ! इस की तो हर घड़ी रहमत भरी है, सारे का सारा रमज़ानुल मुबारक इबादतों, रहमतों, बरकतों की कान है, अल्लाह पाक का अपने प्यारे प्यारे आख़िरी नबी की उम्मत पर येह बहुत बड़ा एहसान है कि उस ने माहे रमज़ान जैसा अज़ीमुश्शान "मेहमान" अता फ़रमाया है। अर्श उठाने वाले फ़िरिश्ते रोज़ादार की दुआ पर आमीन कहते हैं और फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मुताबिक़ "रमज़ान के रोज़ादार के लिये मछलियां इफ़्तार तक दुआए मग़्फ़िरत करती रहती हैं।" (الترغیب والترہیب، 2/55، حدیث:6)

माहे रमज़ान की फ़ज़ीलत के लिये येह फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ही काफ़ी है कि : "अगर बन्दों को मालूम होता कि रमज़ान क्या है तो मेरी उम्मत तमन्ना करती कि काश ! पूरा साल रमज़ान ही हो।" (ابن خزیمہ، 3/190، حدیث:1886)

माहे रमज़ान की आमद मरहबा   माहे सियाम की आमद मरहबा
शहरे रहमान की आमद मरहबा   माहे ग़ुफ़रान की आमद मरहबा

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

पैग़ामे आशिक़े रमज़ां

1444 हिजरी मुताबिक़ 2023 को आशिक़े माहे रमज़ां अमीरे अहले सुन्नत ने दुनिया भर के आशिक़ाने रसूल को माहे रमज़ां माहे नेक आमाल के तौर पर मनाने की तरग़ीब इरशाद फ़रमाई और इस सिल्सिले में एक पैग़ाम जारी फ़रमाया जिसे कुछ ज़रूरी तरमीम के साथ पेश किया जा रहा है आप भी पढ़िये और इस के मुताबिक़ आने वाला माहे रमज़ान माहे नेक आमाल के तौर पर मनाने की तरकीब फ़रमाइये, चुनान्चे अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه फ़रमाते हैं :

तमाम आशिक़ाने रसूल से दरख़्वास्त है कि इस मुबारक महीने (यानी माहे रमज़ान) को नेक आमाल के मुताबिक़ गुज़ारें, फ़र्ज़ रोज़े रखें, फ़राइज़ो वाजिबात की पाबन्दी के साथ साथ तिलावते क़ुरआने करीम भी करें, ज़ियादा से ज़ियादा दुरूद शरीफ़ पढ़ें।

मदारिसुल मदीना और जामिअ़तुल मदीना (बॉयज़ और गर्ल्ज़) के तलबए किराम और तमाम इस्लामी भाई और बहनें अपने अपने नेक आमाल के रिसाले पुर करें और महीना मुकम्मल होने पर अपने यहां के ज़िम्मेदार को जमा भी करवाते रहें और ऐ काश ! हर महीने रिसाला जमा करवाने का मामूल बन जाए। अल्लाह करे ! माहे रमज़ानुल मुबारक में नेक आमाल की ऐसी धूम मच जाए कि शैतान सर पीट कर रह जाए।

सदा के लिये हो जा राज़ी ख़ुदाया   हमेशा हो लुत्फ़ो करम या इलाही

(वसाइले बख़्शिश, स. 110)

माहे रमज़ान माहे नेक आमाल के तौर पर मनाने वालों के लिये दुआए अत्तार

या अल्लाह पाक ! माहे रमज़ानुल मुबारक में नेक आमाल मनाने वालों वालियों, दूसरों को इस की तरग़ीब दिलाने वालों वालियों और किसी भी त़रह़ उस के लिये तआवुन करने वालों, वालियों को दोनों जहानों की भलाइयों से मालामाल फ़रमा, या अल्लाह पाक ! इन की परेशानियां तंगदस्तियां दूर फ़रमा, औलाद के त़लबगारों को औलाद की नेमत से नवाज़ और इन का सीना मदीना बना, बार बार ज़ियारते मदीना से मुशर्रफ़ फ़रमा, या रब्बे ग़फ़्फ़ार ! इन की इन के वालिदैन और आने वाली नस्लों की बे ह़िसाब मग़्फ़िरत फ़रमा, या रब्बल आलमीन ! येह तमाम दुआएं मुझ गुनहगारों के सरदार के ह़क़ में क़बूल फ़रमा। اٰمین بِجاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صلّی اللہُ علیہِ واٰلہٖ وسلّم

पूरे माह का एतिकाफ़ ही कर लीजिये

ऐ आशिक़ाने रमज़ान ! रमज़ानुल मुबारक की बरकतों के क्या कहने ! यूं तो उस की हर हर घड़ी रह़मत भरी और हर हर साअ़त अपने जिलौ में (यानी अपने साथ) बेपायां बरकतें लिये हुए है, मगर इस माहे मोह़तरम में शबे क़द्र सब से ज़ियादा अहमिय्यत की ह़ामिल है। इसे पाने के लिये हमारे प्यारे आक़ा, मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने रमज़ाने पाक का पूरा महीना भी एतिकाफ़ फ़रमाया है और आख़िरी दस दिन का बहुत ज़ियादा एहतिमाम था। (بخاری، 1/671، حدیث:2041) "एक मरतबा सफ़र की वज्ह से आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का एतिकाफ़ रह गया तो अगले रमज़ान शरीफ़ में बीस दिन का एतिकाफ़ फ़रमाया।" (ترمذی، 2/212، حدیث:803 ملخصاً)

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ फ़रमाते हैं : तमाम इस्लामी भाइयों की ख़िदमत में अ़र्ज़ है कि हो सके तो दावते इस्लामी के दीनी माह़ौल में पूरे माहे रमज़ान शरीफ़ का एतिकाफ़ फ़रमा लीजिये वगरना नौकरी वग़ैरा से फ़राग़त पा कर बक़िय्या तमाम वक़्त मस्जिद में गुज़ारें اِنْ شَاءَاللہ الکریم दुनिया व आख़िरत की बे शुमार भलाइयां हाथ आएंगी, मेरी मदनी बेटियां अपने अपने घर में "**मस्जिदे बैत**" में एतिकाफ़ करें मस्जिदे बैत से मुतअ़ल्लिक़ मालूमात के लिये मकतबतुल मदीना के रिसाले "**घरेलू मस्जिद बनाना सुन्नत है**" का मुत़ालआ़ फ़रमा लीजिये।

आ़शिक़ों की धुन

ऐ आ़शिक़ाने रमज़ान ! यूं तो एतिकाफ़ के बेशुमार फ़ज़ाइल हैं मगर उ़श्शाक़ के लिये तो इतनी ही बात काफ़ी है कि आख़िरी अ़शरे का एतिकाफ़ सुन्नत है। ह़दीसे पाक में है : "जिस शख़्स ने ईमान के साथ और सवाब ह़ासिल करने की निय्यत से एतिकाफ़ किया उस के पिछले गुनाह बख़्श दिये जाएंगे।"

(جامع صغیر، ص516، حدیث:8480)

रोज़ा किस पर फ़र्ज़ है ?

तौह़ीदो रिसालत का इक़रार करने और तमाम ज़रूरिय्याते दीन पर ईमान लाने के बाद जिस त़रह़ हर मुसलमान पर नमाज़ फ़र्ज़ क़रार दी गई है इसी त़रह़ रमज़ान शरीफ़ के रोज़े भी हर मुसलमान (मर्द व औ़रत) आ़क़िलो बालिग़ पर फ़र्ज़ हैं। अल्लाह पाक क़ुरआने करीम में इरशाद फ़रमाता है :

يٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا كُتِبَ عَلَیْكُمُ الصِّیَامُ كَمَا كُتِبَ عَلَى الَّذِیْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَۙ(۱۸۳) (پ2، البقرۃ:183)

तर्जमए कन्ज़ुल इरफ़ान : ऐ ईमान वालो ! तुम पर रोज़े फ़र्ज़ किये गए जैसे तुम से पहले लोगों पर फ़र्ज़ किये गए थे ताकि तुम परहेज़गार बन जाओ।

रमज़ान के रोज़े से मुतअ़ल्लिक़ 2 फ़रामीने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

﴾1﴿ जिस ने रमज़ान का रोज़ा रखा और उस की हुदूद को पहचाना और जिस चीज़ से बचना चाहिये उस से बचा तो जो (कुछ गुनाह) पहले कर चुका है उस का कफ़्फ़ारा हो गया। (الاحسان بترتیب صحیح ابن حبّان، 5/183، حدیث:3424) ﴾2﴿ "जिस ने माहे रमज़ान को पाया और उस के रोज़े न रखे वोह शख़्स शक़ी (यानी बद बख़्त) है।"

(معجم اوسط، 3/62، حدیث:3871)

उल्टे लटके हुए लोग

जो लोग रोज़ा रख कर बग़ैर किसी सह़ीह़ मजबूरी के तोड़ डालते हैं वोह अल्लाह पाक के क़हरो ग़ज़ब से ख़ूब डरें। चुनान्चे ह़ज़रते अबू उमामा बाहिली رَضِیَ اللهُ عَنْه फ़रमाते हैं, मैं ने सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को येह फ़रमाते सुना : "मैं सोया हुवा था, ख़्वाब में दो शख़्स मेरे पास आए और मुझे एक दुश्वार गुज़ार पहाड़ पर ले गए, जब मैं पहाड़ के दरमियानी ह़िस्से पर पहुंचा तो वहां बड़ी सख़्त आवाज़ें आ रही थीं, मैं ने कहा : "येह कैसी आवाज़ें हैं", मुझे बताया गया कि येह जहन्नमियों की आवाज़ें हैं। फिर मुझे और आगे ले जाया गया, मैं कुछ ऐसे लोगों के पास से गुज़रा कि उन को उन के टख़्नों की रगों में बांध कर (उल्टा) लटकाया गया था और उन लोगों के जबड़े फाड़ दिये गए थे जिन से ख़ून बह रहा था, मैं ने पूछा : "येह कौन लोग हैं ?" तो मुझे बताया गया कि "येह लोग रोज़ा इफ़्तार करते थे क़ब्ल इस के कि रोज़ा इफ़्तार करना ह़लाल हो।" (الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، 9/286، حدیث:7448)

माहे रमज़ां तुझ में जो रोज़े नहीं रखता कोई वोह बड़ा मह़रूम है बद बख़्त है नादान है

(वसाइले बख़्शिश, स. 703)

नमाज़े तहज्जुद

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! रोज़े के लिये सह़री सुन्नत है, उ़मूमन इस के लिये

आशिक़ाने रसूल उठते ही हैं, क्या ही अच्छा हो कि सह़री से पहले या बाद में कम अज़ कम दो रकअ़तें ब निय्यते तहज्जुद अदा कर ली जाएं। ह़दीसे पाक में है : "जब कोई शख़्स रात में अपने घर वालों को जगाए फिर वोह दोनों या वोह अकेला दो रकअ़तें पढ़ ले तो वोह ज़िक्र करने वालों और वालियों में लिखे जाएंगे।" (ابو داؤد، 2/49، حدیث:1309) ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नई़मी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ इस ह़दीसे पाक की शर्ह़ में लिखते हैं : तहज्जुद के वक़्त थोड़े ज़िक्र की बरकत से इन्सान हमेशा ज़िक्र करने वालों के ज़ुमरे में आ जाता है। (मिरआतुल मनाजीह़, 2/262)

एक और ह़दीस शरीफ़ में है : "रात में क़ियाम को अपने ऊपर लाज़िम कर लो कि येह अगले नेक लोगों का त़रीक़ा है और तुम्हारे रब्बे करीम की त़रफ़ क़ुर्बत का ज़रीआ़ और गुनाहों को मिटाने वाला और गुनाह से रोकने वाला है।"

(ترمذی، 5/323، حدیث:3560)

नमाज़े तहज्जुद से मुतअ़ल्लिक़ 2 शरई़ मसाइल

﴾1﴿ सलातुल्लैल (यानी रात की नमाज़) की एक क़िस्म तहज्जुद है कि इ़शा की नमाज़ के बाद रात में सो कर उठें और नवाफ़िल पढ़ें। ﴾2﴿ कम से कम तहज्जुद की दो रकअ़तें हैं और ह़ुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से आठ तक साबित हैं। (बहारे शरीअ़त, 1/677, 678, ह़िस्सा : 4)

सह़री सुन्नत है मगर सह़री का अज़ान से तअ़ल्लुक़ नहीं

सह़री रोज़े के लिये शर्त़ नहीं, सह़री के बग़ैर भी रोज़ा हो सकता है मगर जान बूझ कर सह़री न करना मुनासिब नहीं कि एक अ़ज़ीम सुन्नत से मह़रूमी है और सह़री में ख़ूब डट कर खाना ही ज़रूरी नहीं, चन्द खजूरें और पानी ही अगर ब निय्यते सह़री इस्तिमाल कर लें जब भी काफ़ी है। रोज़े का अज़ाने फ़ज्र से कोई तअ़ल्लुक़ नहीं यानी फ़ज्र की अज़ान के दौरान खाने पीने का कोई जवाज़ ही नहीं। अज़ान हो

या न हो, आप तक आवाज़ पहुंचे या न पहुंचे सुब्हे सादिक़ से पहले पहले आप को खाना पीना बन्द करना होगा।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ علٰى مُحَمَّد

माहे रमज़ान में कोई नमाज़ न छूटे

ऐ आशिक़ाने रमज़ान ! हम माहे रमज़ान माहे नेक आमाल के तौर पर मना रहे हैं तो फ़र्ज़ नमाज़ कैसे छोड़ सकते हैं इस मुबारक महीने में फ़र्ज़ तो फ़र्ज़ नफ़्ल इबादत भी ब कसरत करनी है ताकि कोई लम्हा नेकियों से ख़ाली न जाए, नमाज़ और वोह भी बा जमाअ़त ज़हे नसीब पहली सफ़ में तो क्या बात है ! अल्लाह पाक के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी मक्की मदनी मुहम्मदे अ़रबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जो सुब्ह की नमाज़ पढ़ता है वोह शाम तक अल्लाह पाक के ज़िम्मे में है।

(معجم کبیر، 12/240، حدیث:13210)

हज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रऊफ़ मुनावी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه लिखते हैं : "ख़ास सुब्ह (यानी फ़ज्र) की नमाज़ का ज़िक्र करने में हिक्मत येह है कि उस नमाज़ में मशक़्क़त (यानी मेहनत) है और इस पर पाबन्दी सिर्फ़ वोही शख़्स कर सकता है जिस का ईमान ख़ालिस हो, इसी लिये वोह अमान (यानी पनाह) का मुस्तहिक़ होता है।"

(فیض القدیر، 6/213، تحت الحدیث:8793)

भाई मस्जिद में जमाअ़त से नमाज़ें पढ़ सदा
होंगे राज़ी मुस्तफ़ा हो जाएगा राज़ी ख़ुदा

(फ़ैज़ाने नमाज़, स. 142)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ علٰى مُحَمَّد

सुन्नते क़ब्लिया और नवाफ़िले बादिया

ऐ आशिक़ाने रमज़ान ! अल्लाह पाक की रह़मत से इस माहे मुबारक में

नफ़्ल का सवाब फ़र्ज़ के बराबर और फ़र्ज़ का सवाब 70 गुना या इस से भी ज़ियादा कर दिया जाता है। (ابن خزیمہ، 3/191، حدیث:1887) जब इस मुबारक महीने में नफ़्ल का सवाब फ़र्ज़ के बराबर है तो नेकियों के मुआमले में बिल्कुल सुस्ती नहीं करनी चाहिये, फ़र्ज़ों से पहले और बाद वाली सुन्नतें और नफ़्ल अदा कर के इस का अज्रो सवाब लूटिये। नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जो रोज़ाना (फ़राइज़ के इलावा) बारह रकअ़तें अदा करेगा, उस के लिये जन्नत में एक घर बनाया जाएगा, चार रकअ़तें ज़ोहर से पहले और दो रकअ़तें ज़ोहर के बाद और दो रकअ़तें मग़रिब के बाद और दो रकअ़तें इशा के बाद और दो रकअ़तें फ़ज्र से पहले।"

(ترمذی، 1/424، حدیث:415)

हो तौफ़ीक़ ऐसी अ़ता या इलाही मैं पांचों नमाज़ें पढ़ूं बा जमाअ़त
हों सारे नवाफ़िल अदा या इलाही मैं पढ़ता रहूं सुन्नतें, वक़्त ही पर

(वसाइले बख़्शिश, स. 102)

सुन्नते तरावीह़

ऐ आ़शिक़ाने रमज़ान ! اَلْحَمْدُ لِلّٰہ ! रमज़ानुल मुबारक में जहां हमें बे शुमार नेमतें मुयस्सर आती हैं उन्ही में तरावीह़ की सुन्नत भी शामिल है, तरावीह़ की नमाज़ सिर्फ़ सात, दस या पन्दरह रोज़ा नहीं बल्कि पूरे माहे रमज़ान पढ़नी होती है। इस की फ़ज़ीलत की भी क्या बात है, चुनान्चे अल्लाह पाक के आख़िरी नबी मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इरशाद फ़रमाते हैं : जो रमज़ान में ईमान के साथ और त़लबे सवाब के लिये क़ियाम करे, तो उस के गुज़श्ता गुनाह बख़्श दिये जाएंगे।

(مسلم، ص298، حدیث:759)

ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه इस ह़दीसे पाक के तह़त फ़रमाते हैं : तरावीह़ की पाबन्दी की बरकत से सारे सग़ीरा (यानी छोटे) गुनाह मुआ़फ़ हो जाएंगे

क्यूंकि गुनाहे कबीरा (यानी बड़े गुनाह) तौबा से और हुक़ूक़ुल इबाद (अल्लाह पाक की बारगाह में तौबा के साथ) हक़ वाले के मुआफ़ करने से मुआफ़ होते हैं।

(मिरआतुल मनाजीह़, 2/288)

अमीरे अहले सुन्नत और तरावीह़

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! मेरा हुस्ने ज़न है कि अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का हर लम्हा अल्लाह पाक की रिज़ा व फ़रमां बरदारी वाले कामों में ही गुज़रता है, माहे रमज़ानुल मुबारक में तो इस क़दर इबादतो रियाज़त का ज़ौक़ो शौक़ बढ़ जाता है कि इस की मिसाल मिलना मुश्किल है ! तक़रीबन 78 साल उ़म्र मुबारक हो जाने के बा वुजूद भी आप रमज़ानुल मुबारक में रोज़ाना मुकम्मल 20 तरावीह़ अदा फ़रमाते हैं। (आह ! गुज़श्ता तक़रीबन तीन या चार साल से घुटनों में तक्लीफ़ की वज्ह से मुफ़्ती साहिब और डॉक्टर के मश्वरे से बैठ कर नमाज़ अदा फ़रमा रहे हैं।) न सिर्फ़ तरावीह़ बल्कि कमज़ोरी और बड़ी उ़म्र के बावुजूद इशराक़ व चाश्त, अव्वाबीन वग़ैरा का एहतिमाम भी फ़रमाते हैं। रमज़ानुल मुबारक के सच्चे आ़शिक़, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه फ़रमाते हैं : मेरी ज़िन्दगी के इन्तिहाई ख़ुशी के तीन मवाक़ेअ़ हैं : ﴾1﴿ रबीउ़ल अव्वल शरीफ़ के पहले 12 दिन, ख़ुसूसन ईदे मीलादुन्नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم 12 रबीउ़ल अव्वल शरीफ़ का दिन ﴾2﴿ ह़ाज़िरिये मदीना और ﴾3﴿ रमज़ानुल मुबारक की आमद।

(अमीरे अहले सुन्नत और माहे रमज़ान, स. 12)

तरावीह़ से मुतअ़ल्लिक़ चन्द ज़रूरी मसाइल

﴾1﴿ तरावीह़ हर आ़क़िलो बालिग़ मुसलमान मर्द व औ़रत के लिये सुन्नते मुअक्कदा है। (دُرِّ مُختار، 2/596, बहारे शरीअ़त, 1/ 688, ह़िस्सा : 4) ﴾2﴿ तरावीह़ की बीस रकअ़तें हैं। मुसलमानों के दूसरे ख़लीफ़ा ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ के

अ़हद में बीस रकअ़तें ही पढ़ी जाती थीं। (سنن کبریٰ للبیہقی، 2/699، حدیث:4617)

﴾3﴿ तरावीह़ की जमाअ़त सुन्नते मुअक्कदा अ़लल किफ़ाया है, अगर मस्जिद के सारे लोगों ने छोड़ दी तो सब इसाअत के मुर्तकिब हुए (यानी बुरा किया) और अगर चन्द अफ़राद ने बा जमाअ़त पढ़ ली तो तन्हा पढ़ने वाला जमाअ़त की फ़ज़ीलत से मह़रूम रहा। (ہدایہ، 1/70) ﴾4﴿ तरावीह़ मस्जिद में बा जमाअ़त अदा करना अफ़्ज़ल है, अगर घर में बा जमाअ़त अदा की तो तर्के जमाअ़त का गुनाह न हुवा मगर वोह सवाब न मिलेगा जो मस्जिद में पढ़ने का था। (فتاویٰ عالمگیری، 1/116) इ़शा के फ़र्ज़ मस्जिद में बा जमाअ़त अदा कर के फिर घर या हॉल वग़ैरा में तरावीह़ अदा कीजिये अगर बिला उ़ज़्रे शरई मस्जिद के बजाए घर या हॉल वग़ैरा में इ़शा के फ़र्ज़ की जमाअ़त क़ाइम कर ली तो तर्के वाजिब के गुनाहगार होंगे।

(फ़ैज़ाने रमज़ान, स. 175 - बहारे शरीअ़त, 1/582)

﴾5﴿ ना बालिग़ इमाम के पीछे सिर्फ़ ना बालिग़ान ही तरावीह़ पढ़ सकते हैं।

(तरावीह़ के फ़ज़ाइलो मसाइल, स. 62)

ऐ हमारे प्यारे प्यारे अल्लाह पाक ! हमें नेक, मुख़्लिस और दुरुस्त क़ुरआने करीम पढ़ने वाले ह़ाफ़िज़ साह़िब के पीछे ख़ुशूओ ख़ुज़ूअ़ के साथ तरावीह़ अदा करने की सआ़दत नसीब कर और क़बूल भी फ़रमा।

اٰمِین بِجاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صلّی اللہُ علیہِ واٰلہٖ وسلّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

तफ़्सीर सुनने/सुनाने के ह़ल्क़े में शिर्कत कीजिये

ऐ आ़शिक़ाने रमज़ान ! फ़ज्र की नमाज़ के बाद अपने हां मस्जिद में लगने वाले तफ़्सीरे क़ुरआन के ह़ल्क़े में शिर्कत कर के क़ुरआने करीम के नूर से अपने सीने को मुनव्वर (यानी रौशन) कीजिये। सुब्ह़ के वक़्त क़ुरआने करीम की एक आयत सीखने या इ़ल्म का एक बाब सीखने की बड़ी बरकतें हैं।

हमारे प्यारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते अबू ज़र رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه से इरशाद फ़रमाया : ऐ अबू ज़र ! तुम्हारा इस ह़ाल में सुब्ह़ करना कि तुम ने अल्लाह पाक की किताब से एक आयत सीखी हो, येह तुम्हारे लिये 100 रकअ़तें नफ़्ल पढ़ने से बेहतर है और तुम्हारा इस ह़ाल में सुब्ह़ करना कि तुम ने इ़ल्म का एक बाब सीखा हो जिस पर अ़मल किया गया या न किया गया, तो येह तुम्हारे लिये 1000 नवाफ़िल पढ़ने से बेहतर है। (ابن ماجہ، 1/142، حدیث:219)

तफ़्सीरे क़ुरआन सुनने या पढ़ने और फ़ैज़ाने सुन्नत से चार सफ़ह़ात पढ़ने के बाद मन्ज़ूम शजरए आ़लिया क़ादिरिय्या रज़विय्या अ़त्तारिया पढ़ कर अपने मशाइख़े किराम, पीरो मुर्शिद और वालिदैन को ईसाले सवाब भी कीजिये, शजरए आ़लिया क़ादिरिय्या से सुब्ह़ के औरादो वज़ाइफ़ पढ़ते हुए इशराक़ व चाश्त के वक़्त तक ज़िक्रे ख़ुदावन्दी में मश्ग़ूल रहिये कि इस की भी बड़ी फ़ज़ीलत है फिर वक़्त हो जाने पर इशराक़ व चाश्त के नवाफ़िल अदा कीजिये।

इशराक़ व चाश्त की फ़ज़ीलत

अल्लाह पाक के आख़िरी नबी मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जो फ़ज्र की नमाज़ बा जमाअ़त अदा कर के "अल्लाह का ज़िक्र" करता रहा यहां तक कि सूरज बुलन्द हो गया फिर दो रकअ़तें पढ़ीं तो उसे पूरे ह़ज और उ़मरे का सवाब मिलेगा। (ترمذی، 2/100، حدیث:586) इसी त़रह़ नमाज़े चाश्त की फ़ज़ीलत बयान करते हुए नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जो चाश्त की दो (2) रकअ़तें पाबन्दी से अदा करता रहे उस के गुनाह मुआ़फ़ कर दिये जाते हैं अगर्चे समुन्दर के झाग के बराबर हों। (ابنِ ماجہ، 2/153، حدیث:1382)

इशराक़ व चाश्त का वक़्त : सूरज त़ुलूअ़ होने के बीस मिनट बाद से ले कर निस्फ़ुन्नहारे शरई तक इन नवाफ़िल को अदा कर सकते हैं।)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

माहे नुज़ूले क़ुरआन

अल्लाह पाक का मुबारक कलाम क़ुरआने मजीद, फ़ुरक़ाने ह़मीद है, इस का पढ़ना पढ़ाना और सुनना सुनाना सब सवाब का काम है। क़ुरआने पाक का एक ह़र्फ़ पढ़ने पर 10 नेकियों का सवाब मिलता है, अल्लाह पाक ने क़ुरआने करीम को रमज़ानुल मुबारक में नाज़िल फ़रमाया है। जैसा कि पारह 2, सूरतुल बक़रह की आयत नम्बर : 185 में अल्लाह पाक इरशाद फ़रमाता है : ﴿شَهْرُ رَمَضَانَ الَّذِیْۤ اُنْزِلَ فِیْهِ الْقُرْاٰنُ﴾ तर्जमए कन्ज़ुल इ़रफ़ान : "रमज़ान का महीना है जिस में क़ुरआन नाज़िल किया गया।"

इस माहे मुबारक में कम अज़ कम एक मरतबा तो ख़त्मे क़ुरआन की सआ़दत पा ही लीजिये, हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہِمْ भी इस महीने में नमाज़े तरावीह़ और इस के इ़लावा कसरत के साथ क़ुरआने करीम की तिलावत फ़रमाते थे।

बुज़ुर्गाने दीन और शौक़े तिलावते क़ुरआन

﴾1﴿ करोड़ों ह़नफ़ियों के इमाम ह़ज़रते इमामे आज़म अबू ह़नीफ़ा رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ रमज़ानुल मुबारक में मअ़ ईदुल फ़ित्र 62 क़ुरआने पाक ख़त्म करते। (الخیرات الحسان، ص50)
﴾2﴿ करोड़ों शाफ़ेइ़यों के इमाम ह़ज़रते इमाम शाफ़ेई़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ माहे रमज़ान में 60 क़ुरआने पाक ख़त्म करते थे और सब नमाज़ में ख़त्म करते। (حلیۃ الاولیاء، 9/142، حدیث:13426)
﴾3﴿ ह़ज़रते अबू अशहब رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ बयान करते हैं कि ह़ज़रते अबू रजा رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ रमज़ानुल मुबारक में हमारे साथ ह़ालते क़ियाम में 10 दिनों में क़ुरआने मजीद ख़त्म करते थे। (الزہد للامام احمد بن حنبل، ص319، حدیث:1839) ﴾4﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना सलाम बिन अबी मुत़ीअ़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना क़तादा बिन दिआ़मा رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ (आ़म दिनों में) सात रातों में एक मरतबा क़ुरआने मजीद ख़त्म किया करते, रमज़ानुल मुबारक में तीन रातों में और आख़िरी अ़शरे की हर रात में एक क़ुरआने पाक ख़त्म करते थे। (حلیۃ الاولیاء، 2/385، حدیث:2655)

ज़कात व फ़ित़रा

अल्लाह पाक की रिज़ा ह़ासिल करने के लिये माल के एक ह़िस्से का जो शरअ़ ने मुक़र्रर किया है मुसलमान, फ़क़ीर, ग़ैर हाशमी को मालिक बना देना ज़कात कहलाता है। (बहारे शरीअ़त, 1/874, ह़िस्सा : 5 मुलख़्ख़सन) आज़ाद, मुसलमान, आ़क़िल, बालिग़ और साह़िबे निसाब पर ज़कात फ़र्ज़ है। (बहारे शरीअ़त, 1/875-876, ह़िस्सा : 5 मुलख़्ख़सन) अल्लाह पाक ने क़ुरआने करीम में कई मक़ामात पर ज़कात अदा करने का हुक्म दिया और इस की अहमिय्यत बयान फ़रमाई है जैसा कि : ﴿ وَاَقِیۡمُوا الصَّلٰوۃَ وَاٰتُوا الزَّکٰوۃَ ﴾ (پ1، البقرۃ:43) तर्जमए कन्ज़ुल इरफ़ान : "और नमाज़ क़ाइम रखो और ज़कात अदा करो।" प्यारे आक़ा صَلَّی اللہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने कई अह़ादीसे करीमा में ज़कात अदा करने की तरग़ीब भी दिलाई है।

दो फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : ﴾1﴿ तुम्हारे इस्लाम का पूरा होना येह है कि अपने अम्वाल की ज़कात अदा करो। (معجم کبیر، 18/8، حدیث:6) ﴾2﴿ इस्लाम की बुन्याद पांच (5) चीज़ों पर है, उन में से एक ज़कात अदा करना भी है।

(ترمذی، 4/275، حدیث:2618 ماخوذاً)

ज़कात से मुतअ़ल्लिक़ चन्द ज़रूरी मसाइल

ज़कात की अदाएगी फ़र्ज़ है और न देने वाला फ़ासिक़ जब कि अदा में ताख़ीर करने वाला गुनहगार व मर्दूदुश्शहादह है (यानी उस की गवाही ना क़ाबिले क़बूल है)। (बहारे शरीअ़त, 1/874, ह़िस्सा : 5 मुलख़्ख़सन) सब से पहले ग़रीब, मिस्कीन और मुफ़्लिसो नादार लोगों को ढूंड कर उन्हें ज़कात दी जाए, वक़्त पर ज़कात अदा करने से ग़रीबों को फ़ायदा पहुंचता है, क़रीबी रिश्तेदार ज़कात के ह़क़दार हों तो उन्हें ज़कात देना ज़ियादा अज्रो सवाब का बाइ़स है। ज़कात अदा न करने से इन्फ़िरादी व

इज्तिमाई, दुनियावी और उख़रवी हर तरह का नुक़्सान पहुंच सकता है जैसा कि आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जो क़ौम ज़कात नहीं देगी अल्लाह पाक उसे क़हत में मुब्तला फ़रमाएगा। (معجم اوسط، 3/275، حدیث:4577)

नफ़्ली सदक़ा व ख़ैरात भी कीजिये

ऐ आशिक़ाने रसूल ! अल्लाह पाक तौफ़ीक़ दे तो ज़कात के इलावा भी इस माहे मुबारक में रिश्तेदारों, हमसायों और ग़रीब मुसलमानों पर अपना माल ख़र्च कीजिये, उन्हें सहरी और इफ़्तारी करवा कर या फिर उन को राशन दे कर या ईद की ख़रीदारी के लिये उन्हें रक़म पेश कर के या जिस तरह भी मुम्किन हो अपनी माली हैसिय्यत के मुताबिक़ उन पर मेहरबानी कीजिये, अल्लाह करीम दोनों जहां में आप के साथ मेहरबानी वाला मुआमला फ़रमाए। اٰمین بِجاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صلّی اللہُ علیہِ واٰلہٖ وسلّم

राहे ख़ुदा में ख़र्च करने और ईसार करने की फ़ज़ीलत

दो फ़रामीने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : ﴿1﴾ "अल्लाह पाक इरशाद फ़रमाता है : ऐ इब्ने आदम ! अपना ख़ज़ाना (सदक़ा कर के) मेरे हवाले कर दे न जलेगा न डूबेगा और न चोरी होगा (क़ियामत के दिन) तेरी शदीद हाजत के वक़्त तुझे लौटा दूंगा।" (الترغیب والترہیب، 2/ 10، حدیث:30) ﴿2﴾ "जो शख़्स उस चीज़ को जिस की ख़ुद इसे हाजत हो दूसरे को दे दे तो अल्लाह पाक इसे बख़्श देता है।" (اتحاف السادۃ المتقین، 9/779)

सब से बढ़ कर सख़ी

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : "रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم लोगों में सब से बढ़ कर सख़ी थे और रमज़ान शरीफ़ में आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم (ख़ुसूसन) बहुत ज़ियादा सख़ावत फ़रमाते थे।" (بخاری، 1/9، حدیث:6)

हाथ उठा कर एक टुकड़ा ऐ करीम ! हैं सख़ी के माल में ह़क़दार हम

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 83)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰهُ علٰی مُحَمَّد

चन्दा करने का ह़दीस से सुबूत

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! माहे रमज़ान में की जाने वाली नेकियों में से एक अहम नेकी दीन की ख़िदमत के लिये चन्दा करना भी है, ख़ुश नसीब हैं वोह आ़शिक़ाने रसूल जो रमज़ान शरीफ़ के मुबारक दिन और रातों में अल्लाह पाक के दीन की मदद के लिये चन्दा करते हैं, याद रखिये ! चन्दा करना जाइज़ बल्कि कारे सवाब है और इस की अस्ल सुन्नत से साबित है। जैसा कि मेरे आक़ा आला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُاللّٰهِ عَلَیْه एक सुवाल के जवाब में इरशाद फ़रमाते हैं : "मस्जिद में अपने लिये मांगना जाइज़ नहीं और उसे देने से भी उ़लमा ने मना फ़रमाया है।" (मज़ीद कुछ आगे लिखते हैं) किसी दूसरे के लिये मांगा या मस्जिद ख़्वाह किसी और ज़रूरते दीनी के लिये चन्दा करना जाइज़ और सुन्नत से साबित है।

(फ़तावा रज़विय्या, 16/418)

मज़ीद सफ़ह़ा 468 पर फ़रमाते हैं : भलाई के कामों के लिये चन्दा करना अह़ादीसे सह़ीह़ा से साबित है, मालदार पर वाजिब नहीं कि सारी मस्जिद अपने माल से बनाए, भलाई के काम में चन्दा की तह़रीक भलाई की त़रफ़ रहनुमाई है। ह़दीसे मुबारक में है : "जो कारे ख़ैर की रहनुमाई करे उस को भी उतना ही अज्र मिलता है जितना कारे ख़ैर करने वाले को।" (مسلم، ص809، حدیث:1893)

सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक शख़्स को हुक्म दिया कि जा कर मक्कए मुअ़ज़्ज़मा के गली कूचों में एलान कर दो, "सदक़ए फ़ित्र वाजिब है।"

(ترمذی، 2/151، حدیث:674)

हज़रते अब्दुल्लाह बिन अब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : मदनी सरकार, ग़रीबों के ग़मख़्वार صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सदक़ए फ़ित्र मुक़र्रर फ़रमाया ताकि फ़ुज़ूल और बेहूदा कलाम से रोज़ों की तहारत (यानी सफ़ाई) हो जाए नीज़ मसाकीन की ख़ूरिश (यानी ख़ूराक) भी हो जाए। (ابو داؤد،2/157،حدیث:1609)

दीन के मुख़्तलिफ़ शोबों में ख़िदमत करने वाली तन्ज़ीम दावते इस्लामी को भी अपनी ज़कात, सदक़ात, अतिय्यात और फ़ितरात दे कर नेकी के कामों में हिस्सा मिलाइये और नेकी की दावत आम करने मे मदद फ़रमाइये।

माहे रमज़ान माहे क़बूलिय्यते दुआ

ऐ आशिक़ाने रमज़ान ! अर्श उठाने वाले फ़िरिश्ते रोज़ादारों की दुआ पर आमीन कहते हैं, दुआ इबादत का मग़्ज़, मोमिन का हथियार, दीन का सुतून और आस्मान व ज़मीन का नूर है। (مستدرک، 2/162، حدیث: 1855) दुआ बला को उतरने से रोकती है। (ترمذی، 5/322، حدیث: 3559 ملخصًا) हदीसे पाक के मुताबिक़ रोज़ादार की दुआ क़बूल होती है। (شعب الایمان،3/415،حدیث:3938) "एक हदीसे पाक में यूं है कि बेशक रोज़ादार के लिये इफ़्तार के वक़्त एक ऐसी दुआ होती है जो रद नहीं की जाती।"

(ابن ماجہ،2/350،حدیث:1753)

लिहाज़ा जब दुआ की इतनी बरकतें हैं और रोज़ेदार की दुआ क़बूल होती है तो दुआ मांगने में ग़फ़्लत और सुस्ती करने के बजाए अपने और अपने अहलो अयाल और दीगर मुसलमानों के लिये ख़ूब दुआएं कीजिये, रब्बे करीम से बे हिसाब मग़्फ़िरत मांगिये, मक्का व मदीना की बा अदब हाज़िरी की दुआ कीजिये, दुनिया और आख़िरत में सलामती मिलने की दुआ कीजिये। अपने मुल्क के इस्तिहकाम और उस की तरक़्क़ी की दुआ मांगिये और दीन की ख़िदमत की तौफ़ीक़ मिलने की दुआ भी लाज़िमी कीजिये। अल्लाह पाक हमारी तमाम जाइज़ दुआओं पर रहमत की नज़र फ़रमाए। اٰمین بِجاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صلّی اللہُ علیہ واٰلہٖ وسلّم

9 मरतबा ज़ियारते मुस्तफ़ा (मदनी बहार)

ऐ आशिक़ाने रसूल ! अल्लाह पाक के मक़्बूल बन्दों की सोहबत में बैठना, इन के फ़रामीन सुनना और उन पर अमल करना बड़ी सआदत की बात है, ख़ुश नसीब हैं वोह आशिक़ाने रसूल जो अमीरे अहले सुन्नत के मदनी मुज़ाकरों में हाज़िर होते और तवज्जोह के साथ इल्मे दीन हासिल करते हैं, मदनी मुज़ाकरों में शिर्कत की तो क्या ही बरकतें हैं और मदनी मुज़ाकरों ने कैसे कैसों की ज़िन्दगी बदल कर रख दी, इस हवाले से एक मदनी बहार पढ़िये और पूरे माहे रमज़ानुल मुबारक में रोज़ाना होने वाले 2 मदनी मुज़ाकरे देखने सुनने की निय्यत कीजिये :

एक इस्लामी बहन ने अमीरे अहले सुन्नत के नाम लेटर भेजा जिस में लिखा था कि वोह पहले पहल बद मज़्हबिय्यत पर ऐसी जमी हुई थीं कि कोई इन्हें हिला भी नहीं सकता था, वोह पीरी मुरीदी के भी सख़्त ख़िलाफ़ थीं, उन के ज़ेहन में मुख़्तलिफ़ सुवालात व एतिराज़ात थे, घर में दावते इस्लामी का चैनल देखते हुए अमीरे अहले सुन्नत के मदनी मुज़ाकरों और बयानात में उन को अपने एतिराज़ात और सुवालात के जवाबात मिलने लग गए, उन को ऐसा लगता था कि अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه उन के हर सुवाल को जानते हैं, उन का कहना है : जो सुवाल उन के ज़ेहन में पैदा होता, अमीरे अहले सुन्नत कुछ ही दिनों में दावते इस्लामी के चैनल पर उस का जवाब इरशाद फ़रमा देते, नतीजतन दावते इस्लामी का चैनल देखना उन का मामूल बन गया और यूं आहिस्ता आहिस्ता वोह आशिक़ाने रसूल की दीनी तन्ज़ीम "दावते इस्लामी" के दीनी माहौल से वाबस्ता हो गईं, अमीरे अहले सुन्नत के मदनी मुज़ाकरों की बरकतें ऐसी ज़ाहिर हुईं कि उन्हों ने मदनी बुर्क़ा पहनना शुरूअ़ कर दिया और दावते इस्लामी के दीनी कामों में हिस्सा लेने लग गईं, अल्लाह पाक के फ़ज़्लो करम से उन्हें फ़ैज़ाने शरीअ़त कोर्स की मुअ़ल्लिमा (टीचर) और अ़लाक़े में डिवीज़न मुशावरत निगरान बनने की भी सआदत मिली । उन्हें दावते

इस्लामी के दीनी माहौल में वोह कुछ मिला जो बयान से बाहर है वोह ह़ल्फ़िया बयान देते हुए कहती हैं कि उन्हें ख़्वाब में 9 मरतबा अल्लाह पाक के आख़िरी नबी, मक्की मदनी मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत नसीब हुई, जिस में दो मरतबा इस त़रह़ दीदारे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हुवा कि अमीरे अहले सुन्नत बारगाहे रिसालत صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में ह़ाज़िर थे और हु़ज़ूरे पाक صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अमीरे अहले सुन्नत से बहुत ख़ुश दिखाई दे रहे थे, اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! येह ईमान अफ़रोज़ मन्ज़र देख कर उन का अ़क़ीदा मज़बूत हो गया कि मस्लके ह़क़ अहले सुन्नत, मस्लके आला ह़ज़रत ही दुरुस्त है।

अल्लाह पाक की अमीरे अहले सुन्नत पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمِین بِجاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صلّی اللہُ علیہِ واٰلہٖ وسلّم

ख़ौफ़े ख़ुदा व इ़श्क़े मुस्त़फ़ा इ़ल्मो अ़मल इस्लाह़े मुआ़शरा
फ़िक़्हे शरीअ़तो त़रीक़त का है मज्मूआ़ मदनी मुज़ाकरा

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

रमज़ान में उ़मरह

ऐ आ़शिक़ाने रमज़ान ! माहे रमज़ान हो सामने ख़ानए काबा हो और बदन पर एह़राम की चादरें हों, येह ज़ौक़ अफ़्ज़ा तसव्वुर ही कैफ़ आवर है, माहे रमज़ानुल मुबारक में उ़मरा करने की बड़ी फ़ज़ीलत है। नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : “रमज़ान में उ़मरा मेरे साथ ह़ज के बराबर है।” (بخاری، 1/614، حدیث:1863) एक और ह़दीसे पाक में है : “रमज़ान में एक उ़मरा करना एक ह़ज के बराबर है।” (ابوداؤد، 2/296، حدیث:1988)

ज़िम्मेदाराने दावते इस्लामी मुतवज्जेह हों !

ह़क़ीक़ी आ़शिक़े रमज़ान अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه नेकी की दावत के जज़्बे से सरशार और सारी दुनिया के लोगों में नेकी की दावत आ़म करने

का भरपूर इरादा रखते हैं। आप ने कई बार दावते इस्लामी के ज़िम्मेदारान को कुछ इस तरह मदनी फूलों से नवाज़ा है कि आप सारा साल मदीनए पाक की हाज़िरी दें, हज करें, उमरा करें मगर रमज़ान शरीफ़ में मसाजिद में नमाज़ियों की बहुत बड़ी तादाद ऐसी भी आ जाती है जो सारा साल मस्जिद का रुख़ नहीं करती अगर सब ज़िम्मेदाराने दावते इस्लामी नेकी की दावत देने के ऐसे अहम मौक़अ पर मदीने की तरफ़ रुख़ कर लेंगे तो इन्हें आक़ाए मदीना صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नतों पर आमिल (अमल करने वाला) कौन बनाएगा ? कौन इन्हें पक्का नमाज़ी और सच्चा आशिक़े रसूल बनाएगा ?

इस बात को यूं समझें कि मुख़्तलिफ़ ऐसे कारोबार करने वाले जिन का सीज़न रमज़ान शरीफ़ या ईदुल फ़ित्र होता है जैसे मिठाई बनाने वाले, दर्ज़ी वग़ैरा। अगर आप इन को फ़्री में भी रमज़ाने मदीना (यानी रमज़ान शरीफ़ में उमरे) का टिकट देंगे तो येह नहीं जाएंगे क्यूंकि उन्हें पता है कि इन दिनों काम कर के हम शायद दस टिकट की रक़म कमा लेंगे, मदीनए पाक किसी और महीने में चलें जाएंगे, जब दुनिया की हक़ीर रक़म हासिल करने का जज़्बा रखने वाले मुफ़्त में भी रमज़ाने मदीना की सआदत नहीं पा रहे तो दुनिया भर में नेकी की दावत आम करने और सारी दुनिया के लोगों की इस्लाह का जज़्बा रखने वाला इस अज़ीम मक़्सद को पूरा करने के लिये अपने वतन में इस अहम मौक़अ पर नेकी की दावत के लिये क्यूं नहीं रुकता ? اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الْكَرِيْم ! आशिक़ाने रसूल की दीनी तन्ज़ीम दावते इस्लामी के तहत होने वाले आख़िरी अशरे और पूरे माहे रमज़ान के एतिकाफ़ में हज़ारों मोतकिफ़ीन मसाजिद में आ जाते हैं अगर ज़िम्मेदारान रमज़ाने मदीना के लिये चले जाएंगे तो इन मोतकिफ़ीन में एक से एक बिगड़े हुओं की इस्लाह कौन करेगा ? उन में मौजूद सिर्फ़ रमज़ान शरीफ़ के नमाज़ियों को पूरे साल का नमाज़ी कौन बनाएगा ? उन्हें सुन्नत के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारने वाला कौन बनाएगा ? मैं ज़िम्मेदाराने दावते इस्लामी को

दरख़्वास्त ही कर सकता हूं, मदीने की हाज़िरियों के और भी मवाक़ेअ़ हैं, चलें एक बार रमज़ाने मदीना की सआ़दत ह़ासिल करें।

अल्लाह करे दिल में उतर जाए मेरी बात

चांद रात

नबियों के सुल्तान صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बरकत निशान है : "जिस ने ई़दैन की रात (यानी शबे ई़दुल फ़ित्र और शबे ई़दुल अज़्ह़ा) त़लबे सवाब के लिये क़ियाम किया, उस दिन उस का दिल नहीं मरेगा, जिस दिन (लोगों के) दिल मर जाएंगे।" (ابن ماجہ،2/365،حدیث:1782)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! लाइक़े अ़ज़ाब कामों का इर्तिकाब कर के "यौमे ई़द" को अपने लिये "यौमे वई़द" न बनाइये। और याद रखिये !

لَيْسَ الْعِيدُ لِمَنْ لَّبِسَ الْجَدِيْد   اِنَّمَا الْعِيْدُ لِمَنْ خَافَ الْوَعِيْد

(यानी ई़द उस की नहीं, जिस ने नए कपड़े पहन लिये, ई़द तो उस की है जो अ़ज़ाबे इलाही से डर गया)

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! रमज़ान शरीफ़ की बरकतों को ज़ियादा से ज़ियादा समेटने और ई़दे सई़द की ह़क़ीक़ी ख़ुशियां पाने के लिये दावते इस्लामी के आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतें सीखने, सिखाने के तीन दिन, बारह दिन, एक माह और बारह बारह माह के क़ाफ़िलों में सफ़र कीजिये और दुनिया भर में सुन्नतों की धूम मचाइये, اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! कई मोतकिफ़ीन चांद रात फ़ैज़ाने मदीना में गुज़ार कर रातों रात या सुब्ह़ नमाज़े ई़द अदा कर के आ़शिक़ाने रसूल के साथ क़ाफ़िलों के मुसाफ़िर बनते हैं। आप भी सुन्नतों भरा सफ़र इख़्तियार कीजिये और दुआ़ए अ़त्तार से ख़ूब ख़ूब ह़िस्सा पाइये।

ख़ूब रोता है तड़पता है ग़मे रमज़ान में   जो मुसलमां क़द्रदान व आ़शिक़े रमज़ान है

(वसाइले बख़्शिश, स. 702)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

अगले हफ़्ते का रिसाला

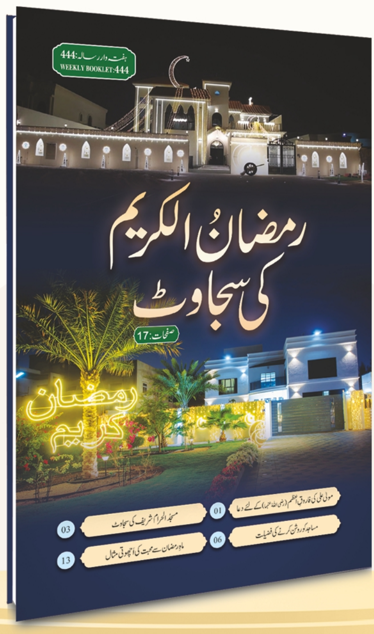

DAWATEISLAMI INDIA

FGN Channel Dekhte Rahiye

MAKTABATUL MADINA INDIA

Delhi : 421, Urdu Market, Matia Mahal, Jama Masjid, Delhi-110006 +91-8178862570

Mumbai : 19/20, Mohammad Ali Road, Opp. Mandavi Post Office, Mumbai-400003 +91-9320558372

Ahmedabad : Faizane Madina, Tinkonia Bagicha, Mirzapur, Ahmedabad-380001 +91-9327168200

Nagpur : Opp. Garib Nawaz Masjid, Saifi Nagar Road, Mominpura, Nagpur-440018 +91-9326310099

www.maktabatulmadina.in feedbackmmhind@gmail.com

For Home Delivery of Books Please Contact on (T&C Apply) +91-9978626025